संत हिरदाराम कन्या महाविद्यालय, भोपाल

(म.प्र. शासन और राष्ट्रीय शिक्षक प्रशिक्षण परिषद द्वारा मान्यता प्राप्त तथा बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल से संबद्ध और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम 1956 की धारा 2(f) एवं 12(b)में मान्यता प्राप्त)

संत हिरदाराम नगर, भोपाल – 462030

दूरभाष – (0755) 2640174, 2640178, 2640631, 2640632, फैक्स – 2640632

Web Site : www.shgc.in E-mail : santhirdaramgirlscollege@yahoo.com

दिनांक : 09.10.2018

प्रेस विज्ञप्ति
संत हिरदाराम कन्या महाविद्यालय में ''नेशनल मीट टू इनोवेट इंडिया इन फोकस वुमन'' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

मंगलवार, दिनांक 9 अक्टूबर, 2018 को परम श्रद्धेय सिद्धभाऊजी की पावन एवं गरिमामयी उपस्थिति में संत हिरदाराम कन्या महाविद्यालय में शहीद हेमू कालाणी शैक्षणिक संस्थान एवं म.प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, भोपाल के संयुक्त तत्वाधान में ''नेशनल मीट टू इनोवेट इंडिया इन फोकस वुमन'' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में परम श्रद्धेय सिद्धभाऊजी, अध्यक्ष, शहीद हेमू कालाणी शैक्षणिक संस्थान, विशिष्ट अतिथि डॉ. प्रमिला मैनी, पूर्व निदेशक, उत्कृष्ट उच्च शिक्षा संस्थान, विशिष्ट अतिथि डॉ. एन.पी. शुक्ला, पूर्व अध्यक्ष, म.प्र. प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, भोपाल, मुख्य अतिथि डॉ. अवनीश कुमार श्रीवास्तव, निदेशक, एम्प्री, भोपाल, मुख्य वक्ता डॉ. सर्दूल सिंह संधु, निदेशक, इनोवेशन एवं डिजाईन सेंटर, आर.डी. यूनिवर्सिटी, जबलपुर, डॉ. ललन के. सिन्हा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सी.आई.ए.ई. भोपाल, डॉ. नीरजा ललन, सेवानिवृत्त वरिष्ठ वैज्ञानिक, सी.आई.ए.ई., डॉ. संजीव सचदेव, मुख्य वैज्ञानिक अधिकारी, एप्को, भोपाल, डॉ. आलोक चौधरी, प्रमुख वैज्ञानिक, रिमोट सेंसिंग एम.पी.सी.एस.टी. भोपाल, डॉ. अनीता तिलवारी, वरिष्ठ वैज्ञानिक, एम.पी.सी.एस.टी. भोपाल, डॉ. आफताब इकबाल, प्राचार्य, क्रीसेंट कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी, भोपाल डॉ. अनंत कुमार सक्सेना, समन्वयक, रासेयो इकाई, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, श्री राहुल सिंह परिहार, समन्वयक, रासेयो मुक्त इकाई, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, श्री विष्णु गेहानी, वरिष्ठ शिक्षाविद्, महाविद्यालय के निदेशक श्री हीरो ज्ञानचंदानी, प्राचार्य डॉ. चरनजीत कौर एवं विभिन्न संस्थानों से पधारे प्राध्यापक, वैज्ञानिक, शोधार्थी, उद्यमी और बड़ी संख्या में छात्र–छात्राएं उपस्थित थे।

अपने स्वागतीय उद्बोधन में महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. चरनजीत कौर ने संस्था का परिचय देते हुए कहा कि वर्ष 2006 से यह महाविद्यालय छात्राओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर रहा है। महाविद्यालय की उपलब्धियों के बारे में उन्होंने बताते हुए कहा कि हम यहाँ छात्राओं को सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक शिक्षा प्रदान कर उन्हें श्रेष्ठ मानव बनाने का प्रयास करते है। प्रकृति हमारी माँ है। शोध नवाचार का जनक है। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में देश के विभिन्न क्षेत्रों की महिला उद्यमी अपने अनुभवों को सांझा करेगी। आर्थिक आत्मनिर्भरता, कौशल विकास एवं आत्म नियमन में यह राष्ट्रीय संगोष्ठी सहायक होगी, ऐसा मुझे विश्वास है।

विशिष्ट अतिथि डॉ. एन.पी. शुक्ला ने कहा कि यह मंच उद्यमी बनने के लिये उपयुक्त है। उन्होंने कहा विद्यार्थी तकनीक को समझकर अपने कौशल और क्षमताओं का उपयोग कर कुशल उद्यमी बने। महिला उद्यमी को ध्यान में रखकर नवाचार की दृष्टि से आयोजित यह राष्ट्रीय संगोष्ठी उद्देश्यपूर्ण एवं लाभदायक है। महिला उद्यमियों के लिये उद्यमिता के क्षेत्र में अपार संभावनाएं है। महाविद्यालय विद्यार्थियों को उद्यमी बनने की प्रेरणा प्रदान करने की दिशा में कार्य करे ताकि वह

अपना जीवन यापन कर दूसरों को रोजगार प्रदान कर सकें। कॉपर टेलिंग, स्वच्छ भारत अभियान, जैविक कृषि, पेटेंट और महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में भी उन्होंने अपनी बात कही।

विशिष्ट अतिथि डॉ. प्रमिला मैनी ने सामायिक विषय के चयन हेतु सभी को बधाई दी। उन्होंने कहा कि सूचना प्रौद्योगिकी के इस समय में सूचना त्वरित रूप से प्रसारित होती है। नवाचार, विकास एवं समाज दोनो के लिये उपयोगी है। नवाचार विकास का प्रणेता है। यह सूचना तकनीकी का युग है। यह युवा पीढ़ी को अधिक प्रभावित कर रहा है। युवा भारतीय संस्कृति की गरिमा बनाएं रखकर नवाचार को अपनाएं, महिलाओं को अधिक सबल और सुदृढ़ बनाए जिससे कि वह परिवार, समाज व राष्ट्र के लिये उपयोगी हो। आप अपने आप पर और ईश्वर पर विश्वास रखे।

संगोष्ठी में मुख्य वक्ता डॉ. एस.एस. संधु जी ने कहा उद्यमी बनने के लिये क्रियान्वयन एवं नवीन खोज की आवश्यकता हैं। उन्होंने कहा कि पाठ्यक्रम में बदलाव कर उसे अधिक व्यवहारिक बनाने की आवश्यकता है, इससे विद्यार्थी रचनात्मक होते है। नवाचार के लिये प्रयोग आवश्यक है। सृजनात्मकता हमें चिंतन की ओर ले जाती है। जिससे हमें ज्ञान की प्राप्ति होती है और यह ज्ञान हमें महान बनाता है। योग एवं प्राणायाम करे। दूरदृष्टि को बनाएं रखे। उन्होंने कहा कि मैं छद्म विज्ञान पर कार्य करता हूँ। हमें अपने दायें मस्तिष्क का अधिक से अधिक उपयोग करना चाहिये ताकि महाविद्यालय, समाज एवं देश का कल्याण हो सके। स्त्री की सृजनात्मकता को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि देवतुल्य व्यक्ति अच्छी कोख के इंतजार में है, आप वह हो सकती है।

मुख्य अतिथि डॉ. ए. के. श्रीवास्तव ने एग्रो वेस्ट से बनने वाले उपयोगी वस्तुओं की जानकारी दी। उन्होंने नई पीढ़ी को एक अच्छा उत्पादक बनने के लिये प्रेरित किया। यह संगोष्ठी दो महत्वपूर्ण विचारों का मिश्रण है। इसके महत्वपूर्ण घटक उद्यमिता, नवाचार, सूचना और प्रौद्योगिकी है। विषय की समझ रखे। निर्यात गुणवत्ता तकनीक को समझकर तकनीक विकसित करे इससे सरकार के राजस्व में वृद्धि होती है। यदि समस्या हैं तो समाधान भी है। देश के निरंतर विकास एवं नैतिक स्थिरता में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। हमें अपने अनुसंधान को उच्चतम् स्तर पर ले जाना है। अभी हम दोयम दर्जे का अनुसंधान कर रहे है।

श्रद्धेय सिद्धभाऊजी ने अपने वक्तव्य में कहा कि इस महाविद्यालय की स्थापना के पीछे संत जी का ध्येय बेटियों को प्रारंभिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा प्रदानकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाकर सशक्त बनाना था, जो वर्तमान में सार्थक भी है। संवेदनशीलता सर्वोपरि हैं। योग से एकाग्रता बढ़ती हैं, परम सत्ता एक है, उसमें पूरा विश्वास रखे। वाणी में सौम्यता, व्यवहार में शालीनता एवं दूसरों के प्रति आदर का भाव महत्वपूर्ण है। बुरी संगत न रखे, एकाग्र बने, धैर्यवान बने, वाणी में संयम और विनम्रता को लाये। ''अंत मति–सो गति'' के माध्यम से छात्राओं को उन्होंने अपनी बात कही। हम भौतिकता की अंधी दौड़ में भाग रहे है। उन्होंने अपनी पीड़ा को अभिव्यक्त करते हुए कहा कि वर्तमान परिपेक्ष्य में हर ओर नैतिक ह्रास दिखाई देता है। प्रतिदिन व्यक्ति स्वार्थी होता जा रहा है। जबकि हमारी संस्कृति में सिखाया गया था कि वह परमात्मा हम सभी में आत्मा के रूप में विद्यमान हैं। परन्तु आज हर परिवार में माता–पिता के प्रति कृतज्ञता एवं प्रेम दिखाई नही देता है। उन्होंने कहा कि अधिक भौतिक सुख सुविधाओं से हम शारीरिक रोगों से ग्रसित होते जा रहे हैं, साथ ही कई विकृतियां भी जन्म ले रही है। संयुक्त परिवार की संस्कृति बदल कर हम एकल परिवार की और बढ़ रहे है। उन्होंने समाचार पत्र का संदर्भ देते हुए कहा कि प्रकृति के साथ जो अत्याचार किया गया है, उससे पृथ्वी 1.5 डिग्री सेल्सियस अधिक गर्म हो जायेगी। खाद्यान की कमी होगी। सोशल साईट्स पर समय व्यर्थ न गवाएं, समझदार व्यक्ति वह है जो दूसरों को देखकर सीखे। पतन के गर्त में जाने से बचे। चिंतन व मनन करे। संसार भावनाओं का खेल है। वसुधैव कुटुम्बकम की धारणा को वास्तव में सार्थक करे। समस्या हम स्वयं बनाते है तो उसका समाधान भी हमें स्वयं ही करना होगा। उन्होंने

कहा कि हमारे मनीषियों का कहना है कि संतोष और क्षमा ही सर्वोत्तम धन है। इससे ही मन की शांति प्राप्त होती है। उन्होंने कहा कि हम अपूर्ण हैं एवं केवल परम सत्ता ही पूर्ण है।
संगोष्ठी में ''सोयाबीन की आहार में भूमिका एवं महत्व'' तथा ''रिमोट सेंसिंग एवं प्राकृतिक उत्पादों'' विषय पर दो तकनीकी सत्रों एवं एक प्रशिक्षण सत्र का आयोजन किया गया। प्रथम तकनीकी सत्र में डॉ. एल.के. सिन्हा एवं डॉ. नीरजा सिन्हा ने सोयाबीन के महत्व को सविस्तार बताया। उन्होंने दैनिक आहार में स्वास्थ्य की दृष्टि से सोयाबीन को नियमित रूप से उपयोग किया जाना चाहिये। भारत सोयाबीन उत्पादन में विश्व में पाँचवे स्थान पर है। अपने भीतर दृष्टिकोण का विकास कर तकनीक में वृद्धिकर हम इसे ओर अधिक प्रभावी एवं उपयोगी बना सकते है। डॉ. नीरजा ललन ने टोफू बनाने की प्रक्रिया का छात्राओं के समक्ष प्रत्यक्ष प्रदर्शन किया। डॉ. संजीव सचदेव, मुख्य वैज्ञानिक अधिकारी, एप्को, भोपाल द्वारा ''प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण'' विषय पर द्रश्य–श्रव्य माध्यम से अत्यधिक प्रभावी वक्तव्य प्रस्तुत किया गया। इस सत्र में श्रीमती सरबजीत कौर, जो कि वर्तमान में जालंधर (पंजाब) में सफल उद्यमी हैं, उन्होंने अपने उद्यम के विषय में सविस्तार बताकर छात्राओं को प्रशिक्षण भी दिया।
द्वितीय तकनीकी सत्र में डॉ. आलोक चौधरी, प्रमुख वैज्ञानिक, रिमोट सेंसिंग, एम.पी.सी.एस.टी. भोपाल ने रिमोट सेंसिंग को सविस्तार बताते हुए कहा कि यह सुदूर संवेदन का एक महत्वपूर्ण औजार है जिसे हम उसकी आवश्यकतानुसार उपयोग करते है। 'भूवन' एप की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि यह गुगल मैप, जीपीएस की सहायता से कार्य करता है। डॉ. अनीता तिलवारी, वरिष्ठ वैज्ञानिक, एम. पी.सी.एस.टी. भोपाल ने महिला सशक्तिकरण में विज्ञान एवं तकनीक की भूमिका समझाते हुए बॉयोटेक्नोलॉजी पार्क के विषय में बताया जो केवल महिलाओं के लिये है। डॉ. आफताब इकबाल, प्राचार्य, क्रीसेन्ट कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी, भोपाल ने वर्मी कंपोस्टिंग एवं ठोस अपशिष्ट निस्तारण प्रबंधन का प्रभावी ढंग से प्रस्तुतिकरण किया, जो कि वर्तमान समय की आवश्यकता है। इस संगोष्ठी में विभिन्न उद्यमियों ने अपने स्टॉल के माध्यम से छात्राओं को प्रशिक्षण देकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित कर लाभांवित किया।

संस्था की ओर से समस्त अतिथियों का शॉल–श्रीफल एवं प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मान किया गया। इस अवसर पर संगोष्ठी पर प्रकाशित स्मारिका का भी विमोचन किया गया। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र का सफल संचालन श्रीमती प्रमिता दुबे परमार एवं डॉ. सुगंधा सिंह द्वारा किया गया। प्रथम, द्वितीय तकनीकी सत्र एवं प्रशिक्षण सत्र का सफल संचालन क्रमशः श्रीमती विभा खरे, डॉ. नेहा जैन एवं श्रीमती दीपिका सक्सेना द्वारा किया गया। संस्था द्वारा इस सफल आयोजन के लिये समस्त आयोजनकर्ता महाविद्यालय परिवार को हार्दिक बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी से 8 संस्थानों के लगभग 1000 से अधिक छात्र/छात्राएं एवं प्राध्यापक लांभावित हुए। उनके लिये यह संगोष्ठी ज्ञान एवं ऊर्जा से परिपूर्ण रही।

डॉ. चरनजीत कौर
प्राचार्य